ज्ञान शान्ति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

का संयुक्त आयोजन

विनोबा दर्शन

राष्ट्रीय संगोष्ठी (5-7 फरवरी 2018)

त्रिदिवसीय रिपोर्ट

वर्धा 5 फरवरी, 2018. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सोमवार को विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में प्रारम्भ हुआ। संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्वल्लित कर प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक एवं उनके सचिव रहे श्रीबाल विजय जी एवं मंचस्थ अतिथियों ने किया। तदु परान्त विनोबा जी के प्रियगीत 'जय जगत पुकारे जा' की प्रस्तुति हुई।

उदघाटन सत्र में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, विनोबा के सचिव रहे श्री बालविजय जी, प्रख्यात गांधीवादी चिंतक एवं पूर्व सांसद प्रो. रामजी सिंह, प्रो. गीता मेहता एवं डॉ. हर्षा बेडकर मौजूद थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. रामजी सिंह एवं संचालन डॉ. शंभू जोशी ने किया। उद्घाटन सत्र में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष प्रो.एस.आर. भट्ट और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र से प्राप्त लिखित संदेश को डॉ. शंभू जोशी ने पढ़कर सुनाया।

संगोष्ठी की संयोजिका **प्रो. गीता मेहता** ने संगोष्ठी की प्रस्तावना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि विनोबा भावे एक महान दार्शनिक थे। विनोबा ने अपने दर्शन को व्यवहार में भी उतारने की कोशिश की थी। उन्होंने देश की भूमि समस्या का अहिंसक समाधान करने हेतु भूदान आंदोलन का सूत्रपात किया। शांति सेना, ग्राम स्वराज, ग्रामदान, श्रमदान के लिए उनके प्रयत्न आज भी हमें प्रेरित करते हैं। विनोबा विज्ञान और आध्यात्म का मेल कराना चाहते थे। उन्होंने विभिन्न धर्मों की मूल प्रेरणाओं को संकलित कर देश-दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जो अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। वे अहिंसक क्रांति के योद्धा थे। प्रो. मेहता ने कहा कि साम्ययोग, सर्वोदय, स्वराज्य, विज्ञान, आध्यात्म, दर्शन आदि पर विनोबा जी के चिंतन और प्रयोग का स्मरण करने और उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित करने में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

डॉ.हर्षा बेडकर ने संगोष्ठी के उद्घाटनकर्ता विनोबा की परंपरा के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता एवं चिंतक बालविजय का परिचय कराते हुए कहा कि बालविजय जी ने विनोबा की विरासत को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने आठ हजार से अधिक किलोमीटर की पदयात्रा की है।

परिचयोपरांत संगोष्ठी को संबोधित करते हुए **बालविजय** जी ने कहा कि विनोबा छात्र जीवन में ही ब्रह्म की खोज करने निकल पड़े थे। और वे संयोगवश गांधी के आश्रम पहुँच जाते हैं। ब्रह्म विद्या और सामाजिक क्रांति दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इसकी शिक्षा विनोबा जी को गांधी जी से मिली थी। विनोबा की दृष्टि वैज्ञानिक और प्रवृत्ति संयम की थी।

आगे उन्होंने कहा कि विनोबा विद्वान के साथ-साथ प्रयोगशील भी थे। यही उनके दर्शनशास्त्र की विशेषता रही है। 'जीव, जगत और जगदीश' ये तीनों विनोबा की प्रेरणा के त्रिमूर्ति थे। विनोबा आजीवन ब्रह्म की खोज में लगे रहे। विनोबा जी की नजर में आध्यात्मिक, भौतिक, नैतिक, सामाजिक साम्य को साधते हुए मनुष्य ब्रह्म तक पहुँच सकता है। व्यक्ति का व्यक्ति, समाज और जड़ चेतन के साथ संबंध का आधार संघर्ष न होकर समत्व ही है, ऐसी विनोबा की मान्यता थी। विनोबा के साम्ययोग के प्रभाव का ही परिणाम था कि उन्हें भारत में लाखों एकड़ भूमि दान में प्राप्त हुई थी। विनोबा ने समाज परिवर्तन के लिए भूदान, ग्रामदान, श्रमदान अभियान चलाया था। अंत में उन्होंने कहा कि आज देश में हिंसक घटनाएँ हो रही है। उसका मुख्य कारण विषमता है। ऐसे में विनोबा के साम्ययोग की प्रासंगिकता आज काफी बढ़ गई है।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए **प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** ने कहा कि विनोबा संत की कोटि के थे और उन्होंने कर्मयोग के जरिए राष्ट्र निर्माण में विशिष्ट भूमिका अदा की थी। विनोबा जी के जय जगत में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का ही भाव अंतर्निहित है। गांधीऔर विनोबा का दर्शन जीवन का दर्शन है। आज एक इंच जमीन के लिए हिंसक संघर्ष हो रहे हैं और विनोबा जी को 40 लाख एकड़ से अधिक भूमि दान में प्राप्त हुई थी, यह विनोबा जी के महान व्यक्तित्व के कारण ही मुमकिन हो पाया था। विनोबा दर्शन और व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरित करते हैं। उनका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी बहुमूल्य योगदान था। विनोबा जी आध्यात्म और संयम के संगम थे।

उद्घाटन सत्र में ही विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित **'विनोबा संचयिता'** का लोकार्पण किया गया। इस मौके पर पवनार आश्रम के गौतम बजाज और संचयिता के संपादक प्रो.नंदकिशोर आचार्य भी मौजूद थे।

उदघाटन सत्र के **अध्यक्ष प्रो.रामजी सिंह** ने कहा कि आज भी दुनिया में महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती मनाई जा रही है। विनोबा गांधी की परंपरा के सबसे योग्य उत्तराधिकारी थे। गांधीजी स्वयं कबूल करते थे विनोबा अध्यात्म के मामले में उनसे आगे हैं। विनोबा को व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए गांधी ने प्रथम सत्याग्रही के बतौर चुना था। विनोबा जन्मजात ब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचर्य आध्यात्म की साधना का प्रमुख आधार स्तंभ है। गांधीजी की विरासत में विनोबा ने योग दिया है। विनोबा ने गांधीजी विरासत को ज्यादा उपयोगी और व्यावहारिक बनाया है। विनोबा ने भूदान के जरिए एक क्रांति पैदा की थी। गांधीजी ने अपनी ईश्वर की परिभाषा में तीन बार फेरबदल किया था- पहली बार

ईश्वर को 'प्रेम' कहा। फिर उन्होंने ईश्वर को 'सत्य' कहा। अंततः गांधीजी 'सत्य' को ही ईश्वर कहा। क्योंकि सत्य से कोई इनकार नहीं कर सकता है लेकिन विनोबा ने ईश्वर को सत्य, प्रेम और करुणा कहा। क्योंकि करुणा के बगैर अहिंसा का टिक पाना मुश्किल है, विनोबा ने 67 हजार किमी की पदयात्रा की थी। शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' कहा था किन्तु विनोबा जी ने 'ब्रह्म सत्यं जगत स्फूर्ति' कहा था। मनुष्य के विषय में विनोबा ने जय जगत की बात की और वैश्विक नागरिकता की बात कही थी।

आगे उन्होंने कहा कि संकीर्ण राष्ट्रवाद के नाम पर साढ़े पाँच हजार युद्ध हो चुके हैं और अब युद्ध का अर्थ सम्पूर्ण सभ्यता का महाविनाश होगा। हिरोशिमा, नागासाकी, वियतनाम, इराक, सीरिया सबके अनुभव हमारे सामने हैं। परमाणु शक्ति ने युद्ध को अप्रासंगिक, मूर्खतापूर्ण और असंभव बना दिया है। इसलिए विनोबा ने कहा था कि विज्ञान आध्यात्मिकता के बगैर बेकार है। हृदय-परिवर्तन वही कर सकता है जिसमें चरित्र का बल है। आज हृदय-परिवर्तन और विचार परिवर्तन की जरूरत है। विषमता से विग्रह और विग्रह से हिंसा होती है। विनोबा ने हृदय-परिवर्तन, विचार परिवर्तन और परिस्थिति परिवर्तन की प्रक्रिया को रेखांकित किया था। विनोबा के जय जगत की आज सम्पूर्ण विश्व को जरूरत है। गांधी का चरित्र पैगंबर का था जबकि विनोबा का चरित्र संत और विद्वान का था।

उदघाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन **डॉ. हर्षा बेडकर** ने किया।

उद्घाटन सत्र के उपरांत संगोष्ठी के **प्रथम चर्चा सत्र की** शुरुआत हुई। इस सत्र की अध्यक्षता **डॉ. गिरीश जानी** ने की । संचालन **डॉ. हर्षा बेडकर** ने किया । **'स्थितप्रज्ञ दर्शन'** विषय पर अपनी बात रखते हुए **डॉ. शर्मिला विरकर** ने कहा कि दर्शन के क्षेत्र में स्थितप्रज्ञ दर्शन विनोबा का विशिष्ट योगदान है। विनोबा ने स्थितप्रज्ञ दर्शन की प्रेरणा गीता से प्राप्त की थी। स्थितप्रज्ञ एक ऐसी अवस्था है जहां मनुष्य बाह्य नियंत्रण से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। जैसे सूर्य प्रकाश देता है, नदी बहती है। स्थितप्रज्ञ कर्म प्रधान होता है न कि फलप्रधान। डॉ. विरकर ने स्थितप्रज्ञ दर्शन की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने कहा कि स्थितप्रज्ञ मन की स्वाभाविक अवस्था है। इसका संबंध हृदय से है।

'अहिंसा की वैज्ञानिक तत्वमीमांसा' विषय पर अपनी बात कहते हुए प्रसिद्ध विद्वान **प्रो. नंदकिशोर आचार्य** ने कहा कि विनोबा जिस समाज का निर्माण करना चाहते हैं, उसकी कुंजी सत्याग्रह है। वे साध्य-साधन शुचिता में आस्था रखते थे। विनोबा मानते थे कि दुनिया में विज्ञान और आध्यात्म ही रहेगा बाकि राजनीति और पंथ मिट जाएंगे। विनोबा चेतना को उत्तरोत्तर विकसित होने वाली प्रक्रिया मानते हैं। प्रेम और करुणा के रूप में इसका प्रकटीकरण होता है। एक तितली को भी आघात होता है तो पारिस्थितिकी को क्षति होती है। प्राणिमात्र की एकता को विनोबा स्वीकार करते हैं। इसे पूरी तरह व्यवहार में उतारना कठिन है परंतु इसका भान रखते हुए हम बेवजह घात करने से बचते हैं। विनोबा कर्म सिद्धान्त में आस्था रखते हैं। वे इसकी मौलिक व्याख्या करते हुए कहते हैं कि कर्म फल की व्याख्या न केवल व्यक्ति के स्तर पर की जानी चाहिए बल्कि उसे सामाजिक तौर पर देखना चाहिए। विनोबा के अनुसार अमीरी-गरीबी सामाजिक व्यवस्था के पाप कर्म का परिणाम है। वे

निरपेक्ष नैतिक मूल्यों में श्रद्धा रखते हैं। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा आदि शाश्वत नैतिक मूल्य हैं। यह नैतिक मूल्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक मूल्य भी है। विनोबा सर्वोदय के प्रणेता कहे जाते हैं किन्तु वे अपना लक्ष्य साम्य योग की प्राप्ति बताते हैं, जिसका सर्वोदय एक आयाम भर है।

पवनार आश्रम की **ऊषा वोरा ने 'उपनिषद और विनोबा'** विषय पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि- विनोबा गीता को अपनी 'माँ' और उपनिषद को 'माँ की माँ' मानते थे। उनकी भाव सृष्टि और विचार सृष्टि गीता से हुई है। विनोबा गीता को उपनिषदों की पुत्री मानते थे। उपनिषद जटिल ग्रंथ हैं। विनोबा ने सूत्र रूप में ईशावास्योपनिषद नामक पुस्तिका की रचना की है। इस उपनिषद में गूढ़ मंत्र हैं। उन्होंने गांधी की मांग पर यह पुस्तिका लिखी थी। अष्टाध्यायी नाम से उन्होंने 18 उपनिषदों के सार को बताने की कोशिश की है। 'उप' यानी नजदीक, 'निषद' यानी निष्ठा पूर्वक। इस प्रकार विनोबा जी ने उपनिषद का गूढ़ अर्थ करते हुए उपनिषद का अर्थ पास बैठना बताया है।

आगे उन्होंने कहा कि विनोबा कहते थे कि कर्म करते-करते 100 वर्ष जीना। राग-द्वेष से मुक्त होते हुए ही मनुष्य अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो सकता है। विनोबा के अनुसार ईश्वर सत्य है, कहना तत्वज्ञान है जबकि सत्य ही ईश्वर है कहना साधना का विषय है। त्यागपूर्ण जीवन और दूसरे की धन की अभिलाषा न करना यह उपनिषद की महत्वपूर्ण शिक्षा है। गांधी-विनोबा का जीवन त्याग पर आधारित था। विनोबा ने कहा है कि जीवन में दो भाग त्याग और एक भाग भोग का होना चाहिए। भौतिकता के लिए समृद्धि चाहिए और आध्यात्मिकता के लिए शांति चाहिए। विनोबा ने आध्यात्मिकता के लिए समृद्धि को भी जरूरी मानना है किन्तु समृद्धि का आशय उनके लिए हर मनुष्य की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति से है। विनोबा को आकाश और गीता से ऊर्जा प्राप्त होती थी। श्रम और स्वाध्याय पर उन्होंने बहुत बल दिया है। उनकी नजर में स्वाध्याय का अर्थ खुद का खुद से संवाद है, इसके बिना अंतरात्मा मुखरित नहीं होती।

प्रतिभागियों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का संबंधित वक्ताओं ने उत्तर दिया। उसके उपरांत अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ यह सत्र समाप्त हुआ।

प्रथम दिन भोजन के बाद **सामाजिक मुद्दे पर केन्द्रित तकनीकी सत्र** की शुरूआत प्रो. नंदकिशोर आचार्य की अध्यक्षता में हुई। सत्र का संचालन **डॉ. शंभू जोशी** ने किया।

विनोबा के करीबी रहे पवनार आश्रम के **गौतम बजाज ने 'आश्रम संकल्पना'** विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि विनोबा की पूरी यात्रा अहिंसा की तलाश रही है। समाज में कत्ल का तरीका है, कानून का तरीका है और तीसरा करुणा का तरीका है। विनोबा इस तीसरे तरीके में यकीन रखते थे। विनोबा का भूदान आंदोलन भी करुणा के साम्राज्य के विस्तार का ही तरीका था। विनोबा ने भूदान के दौर में कहा था कि मेरा जन्म आश्रम के लिए हुआ है। गांधी ने विनोबा के बारे में कहा था कि दूसरा व्यक्ति आश्रम से कुछ सीखने के लिए आता है, यह आश्रम को कुछ देने के लिए आया है। भारत में आश्रम की परंपरा अति पुरानी रही है। आज भी धार्मिक आश्रम चल रहे हैं किन्तु वैदिक परंपरा के आश्रम लुप्त हो गये। गांधी-विनोबा ने कई आश्रम बनाए। विनोबा ने विसर्जन आश्रम बनाया था, जिसमें पुराने

मूल्यों के विसर्जन की बात निहित थी। बोधगया में 'समन्वय आश्रम' और बैंगलोर में 'विश्व नीडम' और अरुणाचल प्रदेश में 'मैत्री आश्रम' की स्थापना की थी, जिसमें पड़ोसी राज्यों व देशों - चीन, तिब्बत से मैत्री का उद्देश्य था। पठानकोट में उन्होंने 'प्रस्थान आश्रम' बनाया। पवनार में उन्होंने 'ब्रह्म विद्या मंदिर' बनाया था। यह बहनों के लिए बनाया गया था। महिलाओं को वेदाध्ययन, संन्यास और ब्रह्मचर्य का अधिकार होना चाहिए, ऐसी विनोबा की मान्यता थी। इसी उद्देश्य से ब्रह्म विद्या मंदिर बनाया गया था। विनोबा छोटा से छोटा काम विश्वदृष्टि के साथ करने की बात करते थे। विनोबा संख्या बल के बहुमत के द्वारा सत्य-असत्य के निर्णय को जायज नहीं मानते थे, इसलिए विनोबा ने सर्वानुमति से निर्णय लेने की प्रक्रिया आश्रम में प्रारंभ की थी, जो आज तक जारी है। इस कारण आश्रम टूटता नहीं है। पवनार आश्रम में कोई पदाधिकारी नहीं होता है। बिना किसी पदाधिकारी-व्यवस्थापक के व्यवस्था कैसे चलती है- यह पूरी दुनिया के लिए कौतूहल का विषय है। आज बाजारवाद का दौर है, स्वास्थ्य व शिक्षा तक का व्यवसाय चरम पर है। विनोबा मानते थे कि जीवन की मूलभूत आवश्यकता हर मनुष्य की पूरी होनी चाहिए। इसके लिए वे हर गाँव की जरूरत की वस्तुओं को गाँव में उत्पादित होना आवश्यक मानते थे। पवनार आश्रम में बाजारवाद का प्रभाव नहीं है, ज़्यादातर जरूरत की वस्तुएँ आश्रमवासी खुद ही पैदा कर लेते हैं। इससे बाजारवाद के उतार-चढ़ाव के असर से आश्रमवासी मुक्त रहते हैं। चित्त को निर्मल करने के लिए ये आश्रम बनाए गए था।

सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक **राधा भट्ट ने 'स्त्रियाँ: विनोबा जी की दृष्टि में'** विषयक चर्चा को संबोधित करते हुए कहा कि विनोबा का व्यक्तित्व बहुआयामी है। विनोबा न केवल विद्वान थे, बल्कि बहुत बड़े क्रांतिकारी थे। वे भूमि की समस्या को पहले ही भाँप गये थे और हृदय परिवर्तन के जरिए करुणा के जरिये इसका हल करना चाहते थे। विनोबा किसान भी थे, मजदूर भी थे, भंगी भी थे। दुनिया के सबसे बड़े पदयात्री भी थे। विनोबा ने स्त्रियों के लिए जो किया वह अनुपम है। विनोबा को अपनी माँ से अत्यंत ही गहरा प्रेम था। वे अपनी माँ को याद करते हुए कभी-कभी भावविभोर हो जाते थे और उनकी आँखों में आँसू भर जाते थे। विनोबा करुणा का साम्राज्य चाहते थे। वे मानते थे कि करुणा आज सत्ता की दासी है। करुणा को इस दासत्व से मुक्त करने में विनोबा स्त्रियों की भूमिका को अहम मानते थे। वे कहते थे कि महिलाओं को समाज की बागडोर अपने हाथों में लेनी होगी । उनके अनुसार स्त्रियाँ सर्वोत्तम गुणों से लैस हैं। स्त्रियाँ आध्यात्मिक गुणों से भरपूर होती हैं। वे पुरुषों के समान महिलाओं के समान अधिकार के हिमायती थे। विनोबा स्त्रियों को स्मृति, मेधा, क्षमा, करुणा से ओत-प्रोत मानते थे। इसलिए विनोबा कहा करते थे कि स्त्रियाँ जहां जाएँ इन गुणों को लेकर जाएँ और इसे फैलाएँ इसके आधार पर समाज का निर्माण करें। अहंकार के मूल्य, मालिक होने के मूल्य के स्थान पर साम्य के आधार पर समाज को रचने-गढ़ने में विनोबा स्त्रियों की भूमिका को अत्यंत ही कारगर मानते थे। विनोबा कहते हैं कि अगर मैं स्त्री होता तो कितनी बगावत करता और बगावत वही कर सकता है जो वैराग्य की मूर्ति होगी। इस प्रकार विनोबा ने वैराग्य को अलग तरह से देखा है और समाज परिवर्तन के लिए शंकराचार्य की भांति वैरागी स्त्रियों को सामने आने की वकालत करते हैं।

गुजरात विद्यापीठ के पूर्व कुलपति **प्रो. सुदर्शन आयंगर ने 'गांधी के शिक्षा दर्शन में विनोबा का योगदान'** विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि विनोबा ने नई तालीम के अभ्यास में आने वाली कठिनाईयों को दूर करते हुए कई मौलिक विचार दिए हैं। गांधी-विनोबा दोनों इस बात से सहमति रखते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के चरित्र का निर्माण करना है। शिक्षा में चरित्र निर्माण नहीं छूटना चाहिए। गांधी चरखा और चरित्र को आवश्यक मानते हैं। विनोबा कहते है कि मैं चरखे को चक्र तक सीमित न रखते हुए उसे सूर्य की भांति देख रहा हूँ जिसमें सारी चीजें समाहित हैं। विनोबा नई तालीम की तुलना शेषनाग से करते हैं। जिस प्रकार धरती का पूरा भार शेषनाग के सर पर है, उसी प्रकार पूरे समाज का भार तालीम पर है। 'सिखाना' भारतीय संस्कृति का अंग नहीं है, यह अंग्रेजों से आया है। यहाँ 'सीखना' शब्द रहा है। मनुष्य जीवन के अंत तक सीखता रहता है और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया ताउम्र चलती रहती है। शिक्षा में जीवन और जीवन में शिक्षा का नई तालीम में संयोजन रहता है। विनोबा इस संयोजन को आवश्यक मानते हैं। विनोबा ज्ञान और कौशल का मेल कराते हैं। इस प्रकार गांधी की मूलभावनाओं के आधार पर नई तालीम को विनोबा व्यापक बनाते हैं। आत्मदर्शन और स्वावलंबन को साथ लेकर विनोबा नई तालीम का दर्शन गढ़ते हैं। दोनों को वे एक-दूसरे का पूरक मानते हुए इसे एकादश व्रत से जोड़ देते हैं। व्यक्ति को मुक्त करने की छटपटाहट गांधी और विनोबा दोनों की है। 'सा विद्या या विमुक्तये' ही दोनों की चिंता थी। आज हम इन मूल्यों को भूल गए, इसी कारण समस्याएँ विकराल रूप धारण करती जा रही है। नित्य नवीन तालीम देश, काल और परिस्थितियों से जुड़ी हुई थी यानि देश, काल और परिस्थितियों के साथ यह तालीम बदलती रहती है। ज्ञान सिर्फ ज्ञान के लिए, अहंकार बढ़ाने के लिए नहीं होना चाहिए। इसलिए विनोबा नई तालीम में से अविद्या को बाहर निकालने की भी बात करते हैं।

प्रो. चंद्रकांत रागीट ने 'आधुनिक भारत के संत- विनोबा भावे' विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि गांधी और विनोबा धरती के चमत्कार थे। आने वाली पीढ़ियाँ शायद यकीन भी नहीं करेंगी कि इन जैसा मनुष्य पृथ्वी पर आया था। विनोबा ने ज्ञान योग के साथ कर्मयोग को साक्षात जी कर दिखाया था। आज की पीढ़ी को गांधी और विनोबा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विनोबा भारत के निर्माण करने वाले प्रमुख आधुनिक संत थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. नंदकिशोर आचार्य** ने कहा कि विनोबा ने शासनमुक्ति की बात की थी। विनोबा का कांचन मुक्ति का प्रयोग बाजार मुक्ति के लिए किया गया था। बाजार मुक्ति के बगैर शासनमुक्ति मुमकिन नहीं है। गांधी और विनोबा का नारीवाद आध्यात्मिक नारीवाद है। गांधी ने इसकी शुरुआत की थी और विनोबा ने इसे विकसित किया था।

संगोष्ठी के प्रथम दिन के अंतिम सत्र के अध्यक्ष **प्रो. चंद्रकांत रागीट** और सह अध्यक्ष **प्रो. अनिल कुमार राय** थे। सत्र का संचालन **डॉ. शंभू जोशी** ने किया। इस सत्र में प्रतिभागियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर **डॉ. डी.एन. प्रसाद** ने 'अनासक्ति दर्शन: परिप्रेक्ष्य विनोबा' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि विनोबा के अनासक्त जीवन का प्रारंभ छात्र जीवन से हो गया था। अनासक्त का अर्थ है बिना किसी आसक्ति के कर्म करना। बिना किसी राग-द्वेष, लोभ-लाभ की आकांक्षा रखते हुए कर्म करना। गीता के मुताबिक फल मनुष्य के हाथ में नहीं होता इसलिए भी फल की आकांक्षा रखे बगैर सदकर्म करते जाना ही अनासक्ति है। विनोबा के पूरे जीवन-दर्शन में हमें अनासक्ति का दर्शन होता है।

डॉ.पुरन्दरदास ने रामनाम की महिमा का सारगर्भित उल्लेख करते हुए संत परम्परा में रामनाम की महत्ता को उजागर किया। अपने विभिन्न स्रोतों से उन्होंने स्पष्ट किया कि रामनाम ने सभी महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को प्रभावित किया। गांधी और विनोबा ने अपने व्यक्तित्व पर राम नाम के प्रभाव को स्वीकार किया और उसे आत्मबल के रूप में देखा।

शाहीन बानो ने विनोबा के सम्पूर्ण व्यक्तित्व, कृतित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए उनके सामाजिक चेतना का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि विनोबा को आध्यात्मिकता की प्रेरणा उनकी माँ से मिला था। विनोबा भारतीय सन्यास परंपरा की उज्ज्वल कड़ी हैं। विनोबा एक महान कर्मयोगी थे और उनका सामाजिक योगदान अतुलनीय है। विनोबा आज़ादी की लड़ाई में कई बार जेल भी गए। विनोबा सांप्रदायिक एकता और विविधता के प्रबल पक्षधर थे। विनोबा की नजर में फासीवाद, नाजीवाद और साम्राज्यवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विनोबा ने गरीबों को भूमि दिए जाने हेतु भूदान आंदोलन चलाया और चंबल के बागियों का अहिंसक ढंग से आत्मसमर्पण भी कराया। उनके योगदानों के देखते हुए 1957 में 'मैग्सेसे' एवं 1983 में मरणोपरांत 'भारतरत्न' के सम्मान से नवाजा गया।

वहीं संगोष्ठी में **डॉ. नीतू सिंह** ने विनोबा के ग्राम स्वराज्य की संकल्पना पर बोलते हुए कहा कि विनोबा हर गाँव को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। इसके लिए विनोबा ने भारत की अपनी आत्मनिर्भर व्यवस्था बनाने की जरूरत को रेखांकित किया था। वर्तमान पर्यावरणीय संकट की तरफ इशारा करते हुए डॉ. नीतू सिंह ने सादगी और संयम की उपयोगिता की भी चर्चा की। भूमंडलीकरण के वर्तमान दौर में कहने को तो हम 'ग्लोबल' हो रहे हैं किन्तु भीतर ही भीतर खोखले होते जा रहे हैं। गाँव परावलंबी होते जा रहे हैं। इसके विपरीत गांधी-विनोबा गाँव के संसाधनों से गाँव को स्वावलंबी बनाना चाहते थे।

सत्र के अंत में सह अध्यक्ष **प्रो. अनिल कुमार राय** ने कहा कि गांधी के विविध आयामों पर अकादमिक चर्चाएं होती रहती हैं किन्तु विनोबा भावे के चिंतन पर अकादमिक चर्चा न के बराबर होती है। ऐसे में आईसीपीआर की यह महत्वपूर्ण पहल है। विनोबा भावे के आश्रम के स्वावलंबन की पद्धति हमें अचंभित करती है। समाजव्यवस्था का वह अद्भुत मॉडल है। बावजूद इसके आज यह मॉडल विस्तार लेने के बजाए सिमटता जा रहा है, यह चिंताजनक स्थिति है।

सत्र की समाप्ति के उपरांत गालिब सभागार में ही फिल्म डिवीजन द्वारा विनोबा के जीवन पर बनाई गई डाक्यूमेंट्री का प्रदर्शन किया गया।

द्वितीय दिवस

वर्धा, 6 फरवरी. विनोबा दर्शन पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के **दूसरे दिन** तकनीकी सत्र का प्रारंभ हुआ। सत्र की **अध्यक्षता** पवनार आश्रम की **प्रवीणा देसाई** ने की। संचालन **डॉ. हर्षा बेडकर** ने किया। इस सत्र में विद्या भवन के निदेशक डॉ. गिरीश जानी, डॉ. गीता मेहता, पवनार आश्रम से निकलने वाली पत्रिका 'मैत्री' की संपादक कंचन श्रीवास्तव एवं प्रवीणा देसाई वक्ता के बतौर उपस्थित थे।

सत्र का प्रारंभ **प्रवीणा देसाई** के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने **'विनोबा का गीता प्रवचन'** विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि विनोबा की मान्यता थी कि दुनिया में जितने लोग हैं, उतने स्वधर्म हैं। हर मनुष्य को अपने ईश्वर तक पहुँचने में विविधता है। मनुष्य की अंतरात्मा हर क्षण मनुष्य को सही-गलत का भान कराते रहती है। विनोबा के गीता प्रवचन में एक आंतरिक धारा चलती है। विनोबा कहते हैं कि ईश्वर हमारे भीतर है। ईश्वर सत, चित और आनंद अर्थात 'सच्चिदानंद' है। सत जहां है, वहाँ ज्ञान है। मनुष्य को सत, चित और आनंद की प्राप्ति में देर नहीं करनी चाहिए। विनोबा भारतीय परंपरा के ऋषियों के योगदान को स्वीकार करते हैं। विनोबा ने गीता पर ज्ञानेश्वर, शंकराचार्य और महात्मा गांधी से प्रेरणा प्राप्त की है। हृदय को विकसित करने की कला वह संत ज्ञानेश्वर से ग्रहण करते हैं।

आगे उन्होंने कहा कि गीता का कर्म-फल सिद्धांत प्रधान तत्व है। कर्मयोग अनंत फल देता है। कर्म का बाह्य फल छिलके के समान होता है। चित्तशुद्धि, समत्व, निष्कामता, निःस्वार्थता एवं सूक्ष्मता विनोबा जी के चिंतन का प्रमुख तत्व है। विनोबा के कर्मयोग का सार है कि हर व्यक्ति को कर्म करना आवश्यक है। प्रकृति कर्म करती है- यह गीता का महत्वपूर्ण सार है। विनोबा में अहले दर्जे की निर्दोषता का गुण था। वे मानते थे कि वैराग्य के सिवा कोई रास्ता नहीं है। मनुष्य मरणशील है किन्तु संसार का सदा अस्तित्व रहता है। इसलिए विनोबा साम्य पर आधारित समाज की रचना आवश्यक मानते हैं। विनोबा जी की मान्यता थी कि मनुष्य अपने चित्त की शुद्धि के लिए जो करता है वह 'तप' है, जो समाज की शुद्धि के लिए करता है वह 'दान' है और सृष्टि की शुद्धि के लिए जो करता है वह 'यज्ञ' है।

'विनोबा दर्शन की आध्यात्मिक बुनियाद' विषय पर चर्चा करते हुए **प्रो. गीता मेहता** ने कहा कि विनोबा ने 'ब्रह्म' की व्यवस्थित व्याख्या नहीं की है। उनके लिए ब्रह्म सत्य था। विनोबा सगुण और निर्गुण ब्रह्म को एक दूसरे का पूरक मानते थे। जगत को विनोबा 'स्फूर्ति' मानते थे। जगत उनके लिए शंकराचार्य की भांति 'माया' न होकर यथार्थ था। इस मामले में वे मार्क्स और गांधी की तरह दिखते हैं। विनोबा रामानुजाचार्य और शंकराचार्य के जगत संबंधी विचारोंसे असहमति जाहिर करते हैं। गांधी और विनोबा जगत को बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। दोनों की विचारधारा व्यावहारिक है। दोनों सत्य की खोज के लिए किसी एकांत में जाने के बजाय समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में ही इसका दर्शन करते हैं। 'जीवनम सत्यशोधनम' - जीवन और जगत के बीच एकरूपता

स्थापित करने की ही उनकी दृष्टि थी। विनोबा ईश्वर को 'विश्व आत्मा' करार देते हैं। वे उपनिषदों की इस बात से सहमति रखते हैं कि- 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'।

'विनोबा भावे की वेद दृष्टि' विषय पर **डॉ. गिरीश जानी** ने अपनी बात रखते हुए कहा कि विनोबा ने 50 वर्षों से अधिक समय तक वेदों का अभ्यास किया था। लगभग 4 हजार वेद मंत्र उन्हें कंठस्थ थे। वेद की उत्पत्ति, वेदों के पढ़ने के अधिकार आदि के संबंध में विनोबा जी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं देते हैं। किन्तु विनोबा ने वेद को अपने लिए स्वीकार किया है। वे जब वेद की बात करते हैं तो अपनी श्रद्धा, समता और तैयारी के साथ उसका अनुशीलन करते हैं। विनोबा वेदों को 'छंदस' कहते हैं, क्योंकि इसमें परोक्ष रूप से बात बताई गई है। विनोबा के गीता दर्शन को समझने हेतु उनकी वेद दृष्टि को समझना आवश्यक है। विनोबा को वेद के अंदर भक्ति, कर्म, उपासना, समत्व दिखाई देता है। विनोबा वेदों को समग्रता में देखते हैं, इसलिए विनोबा की वेद दृष्टि को भी समग्रता में ही समझा जाना चाहिए। विनोबा कहते हैं कि उन्हें इष्ट देवता का साक्षात्कार हुआ है। विनोबा ने अत्यंत ही सरलता, सहजता और सुगमता के साथ वेदों की व्याख्या की है। वेदों में वर्णित स्वराज्य में बहुसंख्यक का दायित्व है कि वह अल्पसंख्यक की रक्षा करें।

विद्या मंदिर की **कंचन श्रीवास्तव** ने **'विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय का विचार'** विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विनोबा कहते थे विज्ञान के साथ आध्यात्म मिला तो कल्याणकारी होगा। विनोबा की नींव आध्यात्म की है और दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। विज्ञान+आध्यात्म= सर्वोदय या स्वर्ग, यह विनोबा का सूत्र था। विनोबा कहते थे कि विज्ञान और आध्यात्म का एकमेव हो जाना आज दुनिया के लिए जरूरी है। विश्व की मुक्ति का यही एक मार्ग है, दोनों का मेल हो तभी धरती पर स्वर्ग लाया जा सकता है। आज विज्ञान तेजी से आगे बढ़ रहा है, उसके थमने का कोई प्रश्न नहीं है। लेकिन विनोबा कहते हैं कि विज्ञान पर आत्मा का अंकुश होना चाहिए क्योंकि विज्ञान विनाशक भी हो सकता है, तारक भी हो सकता है। दोनों प्रकार की खोजें विज्ञान ने की है। खुद विज्ञान में यह शक्ति नहीं कि उसका कैसा उपयोग हो, इस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है। विनोबा कहते हैं कि जिसके आत्मज्ञान में दोष होगा वह विज्ञान का गलत इस्तेमाल करेगा। विज्ञान मोटर का एक्सिलेटर है जबकि आत्मा उसका स्टेरिंग व्हील है। दोनों का एक साथ होना जरूरी है। आज विज्ञान पृथ्वी के अलावा अन्य की खोज तक पहुँच गया है। आज पृथ्वी पर अणु बम, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम आदि संहारक चीजें हैं। चाँद पर बस्तियाँ बसने की योजना बन रही है। ऐसी सूरत में यदि विज्ञान पर आध्यात्म का नियंत्रण न हो तो महाविनाश होगा। विज्ञान की ही भांति आध्यात्म के क्षेत्र में भी नई चीजें खोजनी होगी। 'ब्रह्म विद्या मंदिर' विनोबा की आध्यात्मिक प्रयोगशाला थी। राजनीति के साथ विज्ञान जुड़ा तो सर्वनाश होगा। आज मनुष्य के पास पूरी दुनिया को नष्ट करने की शक्ति आ गई है इसलिए विनोबा ने धर्म और राजनीति को अप्रासंगिक ठहराया है और कहा है कि ये अब खत्म होने वाले है। देश में यानी पूरे विश्व में विज्ञान और आध्यात्म का समान विकास करना होगा। विनोबा मन से ऊपर उठने की बात करते हैं। आज विज्ञान की भी तरक्की हो रही है और दूसरी तरफ अन्याय, विषमता, जातिवाद, सांप्रदायिकता की संकीर्णता बढ़ती जा रही है

इसलिए विनोबा पूरे समाज के लिए मन से ऊपर उठते हुए वैज्ञानिक-आध्यात्मिक वृत्ति का विकास करना आवश्यक बताते हैं। विनोबा जीवन के हर क्षेत्र में, हर काम में वैज्ञानिकता और शास्त्रीयता के संतुलित विकास की बात करते हैं। विज्ञान का क्षरण करने के बजाए वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति का विकास ही विश्व को मुक्ति दिलाएगा। पर्यावरणीय असंतुलन आदि की समस्या जटिल होती जा रही समस्या का भी इसी के जरिए समाधान मुमकिन हो सकता है। इसलिए विनोबा आध्यात्म, विज्ञान, वसुधैव कुटुंबकम और विश्व मानवता की तरफ बढ़ना जरूरी मानते हैं। विनोबा ने विश्व राष्ट्र की परिकल्पना रखी थी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के**द्वितीय तकनीकी सत्र** की **अध्यक्षता प्रो. सोहनराज तातेड़** ने की संचालन म. गां. अ.हिं.वि.वि. के असिस्टेंट प्रोफेसर **डॉ. मिथिलेश कुमार** ने किया। इस सत्र में डॉ. हर्षा बेडकर, डॉ. तबस्सुम शेख एवं डॉ. थामस चिरापुथ ने अपने वक्तव्य दिए।

डॉ. हर्षा बेडकर ने **'विनोबा का धर्म दर्शन'** विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि विनोबा का धर्म मानवता का धर्म था। गांधी ने राजनीति के आध्यात्मिकरण की बात की थी। विनोबा ने पूरे सामाजिक जीवन के आध्यात्मिकरण पर बल दिया। गांधी-विनोबा दोनों हिन्दू धर्म से ताल्लुक रखते थे, किन्तु दोनों में दूसरे धर्म के प्रति संकीर्णता का भाव नहीं था। विनोबा भी गांधी जी की भांति ही सर्व धर्म समभाव में यकीन रखते थे। वे हर धर्म को समान आदर की नजर से देखते हैं। उन्होंने ईसाइयत, इस्लाम आदि धर्मों की उच्च शिक्षाओं को आत्मसात किया था। वे विविधताओं का सम्मान करना आवश्यक मानते थे। अल्पसंख्यकों व कमजोर तबकों के संरक्षण के वे हिमायती थे।

डॉ. तबस्सुम शेख ने **'विनोबा और इस्लाम'** विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा कि विनोबा ने 'कुरान सार' नामक पुस्तिका लिखी थी, इससे पूर्व उन्होंने 25 वर्षों तक कुरान का अध्ययन किया था। विनोबा ने दानशीलता की प्रेरणा इस्लाम से ग्रहण की थी। उनके भूदान आंदोलन के पीछे 'जकात' की प्रेरणा थी। इस्लाम की बराबरी और शांति के दर्शन से भी वे काफी प्रभावित थे।

डॉ. थामस चिरापुथ ने **'विनोबा और ईसाइयत'** विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि 15 वर्ष की उम्र में मुझे 1981 में पवनार आश्रम में विनोबा जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। विनोबा और गांधी ईसाइयत से अत्यंत ही प्रभावित थे। गांधी ने ईसा के आत्म बलिदान और प्रेम की भावना से प्रेरणा ग्रहण की थी। वे रस्किन के 'अंटू दिस लास्ट' से भी काफी प्रभावित थे। विनोबा के जीवन दर्शन पर भी इसका व्यापाक असर दिखता है। विनोबा ने 'ईसाइयत की शिक्षा का सारांश' नामक पुस्तिका लिखी। इसमें उन्होंने सत्याग्रह और करुणा का दर्शन किया है। ईसाई मिशनरी के इस प्रचार से विनोबा सहमत नहीं थे कि ईसाई धर्म ही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र रास्ता है।

वक्ताओं की चर्चा के उपरांत सत्र के अध्यक्ष **डॉ. सोहनराज तातेड़** ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विनोबा ने दुनिया के विभिन्न धर्मों का मंथन कर उससे सर्वोत्तम तत्वों को दुनिया के सामने साररूप में रखा है। आज भी धर्मों के नाम पर समाज में घृणा-द्वेष और हिंसा जारी है। इससे मुक्ति पाने हेतु हमें विनोबा -गांधी के दर्शन एवं व्यवहार से प्रेरणा लेनी होगी।

संगोष्ठी के दूसरे दिन भोजनावकाश के बाद **'राजनीतिक और आर्थिक विचार'** पर केन्द्रित चर्चा सत्र की शुरुआत हुई। सत्र की **अध्यक्षता प्रो. सुदर्शन अयांगर** ने की। इस सत्र में डॉ. रॉड्रिक चर्च, डॉ. पराग चोलकर, डॉ. मिलिंद बोकिल एवं डॉ. पुष्पेंद्र दुबे बतौर वक्ता मौजूद थे।

डॉ. रॉड्रिक चर्च ने **'ऋषि खेती और कांचन मुक्ति'** विषय पर विस्तारपूर्वक अपनी बात रखी। उन्होंने भारत में गांधी-विनोबा के आश्रम के अपने अनुभवों को भी शेयर किया। उन्होंने वर्तमान बाजारवाद के दौर मे कांचन मुक्ति की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने प्राकृतिक खेती की जरूरत पर भी प्रकाश डाला। प्राकृतिक खेती में शरीर श्रम, मिट्टी का संरक्षण आदि एक साथ सम्पन्न होता है।

प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक **पराग चोलकर** ने **'भूदान और ग्रामदान की प्रासंगिकता'** विषय पर बोलते हुए कहा कि अकादमिक क्षेत्र में विनोबा के दर्शन की उपेक्षा होती रही है। इसका एक कारण तो यह हो सकता है कि अकादमिक क्षेत्र सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहता है। विनोबा के भूदान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पाठ्यपुस्तकों मे भूदान आंदोलन का सम्यक मूल्यांकन नहीं हुआ है। अर्थशास्त्र की मोटी-मोटी पुस्तकों में भूदान की कोई चर्चा नहीं मिलती है। भूदान को लेकर व्याप्त भ्रांत धारणाओं की भी उन्होंने आलोचनात्मक समीक्षा की जरूरत को रेखांकित किया। हकीकत को बयान करते हुए उन्होंने कहा कि अब तक 25 लाख एकड़ से ज्यादा जमीन भूमिहीनों के बीच वितरित की जा चुकी है। स्वतन्त्रता आंदोलन से संबंधित इतिहास की किताबों में भी विनोबा के इस व्यापक आन्दोलन की कोई समुचित चर्चा नहीं मिलती है। उन्होंने बताया कि अकेले बिहार में 3 लाख लोगों ने भूमि दान में दी थी, ये सभी जमींदार नहीं थे।

आगे उन्होंने कहा कि विनोबा के लिए भूदान आंदोलन धर्म संस्थापना का मसला था। विनोबा के लिए 'दान' याचना न होकर संविभाग का विषय था। भूदान और ग्रामदान विनोबा के दर्शन को मूर्तरूप देने का जरिया था। यह मालिकी के विसर्जन का प्रयोगिक रूप था। गाँव की जमीन गाँव की हो। आज विकास के वर्तमान दौर में भूदान-ग्रामदान की प्रासंगिकता बढ़ गई है। विकास का मौजूदा मॉडल टिकाऊ नहीं है, इसका विकल्प भूदान-ग्रामदान के दर्शन में निहित है।

डॉ. मिलिंद बोकिल ने **'स्वराज्य शास्त्र व्यवहार : मेंढा लेखा गाँव के संदर्भ में'** विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले के मेंढालेखा गाँव में गांधी-विनोबा के दर्शन को जमीन पर उतारा गया है। ऐसे और भी गाँव हैं जहां इसका प्रयोग चल रहा है। विनोबा ने स्वराज्यशास्त्र में गाँव के संचालन की प्रक्रिया की बताई गई है। उन्होंने एकायतन, अनेकातन एवं सर्वायतन के विनोबा के सिद्धान्त की विस्तृत चर्चा की। मेंढालेखा गाँव में सर्वायतन के सिद्धान्त के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं। एकायतन में एक व्यक्ति का निर्णय प्रमुख होता है, वहीं बहुयातन में निर्णय बहुमत से लिए जाते हैं जबकि सर्वायतन में सभी मिलकर निर्णय लेते हैं। मेंढालेखा गाँव में लोगों ने यह नारा दिया है कि **'दिल्ली-मुंबई में हमारी सरकार, हमारे गाँव में हमही सरकार।'** इस गाँव में स्वानुशासन व्याप्त है। यह देश का पहला गाँव है जिसे 2006 ई. के सामुदायिक

वनाधिकार कानून के तहत 1800 हेक्टेयर वन पर सामुदायिक अधिकार प्राप्त हुआ है। उस गाँव में स्त्री-पुरुष दोनों को समान मजदूरी मिलती है। इस गाँव ने 2013-14 ई. में ग्रामदान की भी घोषणा की है।

डॉ. पुष्पेंद्र दुबेने **'विनोबा भावे के अर्थ दर्शन'** विषय पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत में आज भी लोग दूसरे का मल-मूत्र साफ करने को मजबूर हैं। विनोबा ने स्वच्छता को लेकर काफी काम किया है। खादी-ग्रामोद्योग को लेकर भी विनोबा का उल्लेखनीय योगदान है। विनोबा शांतिमय उद्योग पर केन्द्रित अर्थ रचना करना चाहते थे। ग्राम स्वराज्य और ग्रामदान के बगैर टूटती-बिखरती ग्राम व्यवस्था को बचाया नहीं जा सकता है। वर्तमान भूमंडलीकरण के दौर में विकास का झूठा सब्जबाग दिखाया जा रहा है। भारत में किसान आत्महत्याएँ रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। उन्होंने कृषि-पशुपालन की वर्तमान स्थिति पर भी प्रकाश डाला। विनोबा ने गौहत्या पर निषेध लगाने के लिए सत्याग्रह किया था। जब तक विनोबा के गौवंश हत्या पर सत्याग्रह का असर रहा तब तक सांप्रदायिक शक्तियाँ गौरक्षा के नाम पर दूसरे धर्म के लोगों पर हमले की हिम्मत न जुटा सके।

डॉ. दुबे ने वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य की चर्चा करते हुए पूंजीवाद के संकटों की भी संक्षिप्त चर्चा की। देश में बढ़ती बेकारी और विषमता की भयावहता पर भी उन्होंने प्रकाश डाला और इस पूरे संदर्भ में गांधी-विनोबा के आर्थिक दर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

सत्र के अंत में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. सुदर्शन आयंगर** ने सभी वक्ताओं के द्वारा प्रस्तुत वक्तव्यों की मूल संकल्पनाओं को सारांश रूप में रखा। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में अर्थतंत्र और राजनीति के गहरे संबंध स्थापित हो गए हैं। इस चर्चा में प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाएँ भी रखी, जिसका समाधान संबन्धित वक्ताओं ने किया।

प्रो. मनोज कुमार की अध्यक्षता एवं **प्रो. नृपेन्द्र प्र. मोदी** की सह-अध्यक्षता में दूसरे दिन के अंतिम तकनीकी सत्र की शुरुआत हुई। **डॉ. अरुण प्रताप सिंह** ने **'विनोबा दर्शन में चित्त की अवधारणा'** विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि विनोबा के विचार में वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय है। विनोबा दर्शन में चित्त के स्वरूप की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि विनोबा संचितता की बात करते हैं। वे काम-वासना, लोभ-भोग से चित्त को मुक्त करना चाहते हैं। विनोबा चित्त के आंतरिक और बाह्य दो स्वरूप बताते हैं। मनुष्य अपने ही अभिप्रायों, आग्रहों-पूर्वाग्रहों से चित्त को आच्छादित कर उसमें उलझा रहता है और कोल्हू के बैल की भांति उसमें पिसता रहता है। विनोबा मनुष्य के आंतरिक चित्त के परिष्कार की बात करते हैं। वे चित्त को ज्ञान, संवेदना का आंतरिक साधन मानते हैं। मन के परे गए बगैर मनुष्य की मुक्ति मुमकिन नहीं है। विनोबा देह -बोध से उबरने की बात करते हैं। मनुष्य को अपने आंतरिक सद्गुणों की पहचान करते हुए उसे विकसितकरते जाना चाहिए। इसी के माध्यम से चित्त का परिष्कार हो सकता है।

डॉ. मिथिलेश कुमार ने **'भूदान की ज्ञानमीमांसा'** विषय पर अपनी बात कहते हुए कहा कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में सबसे बड़ी समस्या भूमि की समस्या थी। इसके समाधान का हिंसक उपाय

था, सरकारी तरीके से भी इसका उपाय किया जा सकता था। विनोबा ने इन दोनों तरीकों के बजाए भूमि समस्या का अहिंसक समाधान प्रस्तुत किया। विनोबा **'सबै भूमि गोपाल की'** के दर्शन को सामाजिक व्यवहार का विषय बनाना चाहते थे।

आगे उन्होंने कहा कि विनोबा का भूदान आंदोलन और ग्रामदान आंदोलन तमाम सफलताओं के बावजूद निरंतरता प्राप्त नहीं कर पाया। मूल्यबोध के स्तर पर भूदान आंदोलन सफल रहा है।

इस सत्र में डॉ. अर्चना पाठ्या, ममता कुमारी, डॉ. चंद्रकला साहू, शिवशंकर पटेल आदि ने भी अपने-अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

सत्र के **सह अध्यक्ष** गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विभागाध्यक्ष **प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी** ने कहा कि गांधी ने गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना था जबकि अपने से छोटी उम्र के विनोबा को अपना आध्यात्मिक गुरु करार दिया था। उन्होंने कहा कि मार्क्स ने वर्ग संघर्ष की बात की थी किन्तु समाज परिवर्तन की यह प्रक्रिया मूलतः परंपरागत ही थी। यह हिंसा पर आधारित थी। मार्क्स के विपरीत गांधी ने समाज परिवर्तन की नई प्रक्रिया चलाई जो हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया थी। विनोबा ने इस प्रक्रिया को भूदान, ग्रामदान के जरिए चरमोत्कर्ष पर पहुंचाया। विनोबा जी को 40 लाख से अधिक एकड़ भूमि भूदान आंदोलन में प्राप्त हुई, जो पूरी दुनिया के इतिहास में अभूतपूर्व परिघटना है।

वहीं सत्र के **अध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार**, निदेशक, महात्मा गांधी-फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गांधी-विनोबा के अनुयायी गांधी-विनोबा की आलोचनात्मक समीक्षा से बचने की कोशिश करते हैं। आलोचनात्मक समीक्षा के बगैर किसी भी विचारधारा का प्रवाह रुक जाता है। लोकतन्त्र में असहमति का दायरा निरंतर कम होता जा रहा है, यह खतरनाक स्थिति है। आज फासिस्ट शक्तियाँ गांधी-विनोबा सरीखे महापुरुषों का इस्तेमाल कर रही हैं। गांधी-विनोबा के बाद गांधी-विनोबा की संस्थाओं और उससे जुड़े व्यक्तियों की कमियों की समालोचना से ही समाधान का रास्ता निकलेगा। अन्यथा गांधी-विनोबा की विचारधारा का आकर्षण खत्म हो जाएगा। आज गो-वध के नाम पर अल्पसंख्यकों को मारा जा रहा है। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के गुणगान के जरिए मुक्ति का रास्ता नहीं निकलता। हमें गांधी-विनोबा को राम-कृष्ण बनाने से बचना होगा।

सत्र की समाप्ति के उपरांत संध्या में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी नाट्य कला विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर **जैनेन्द्र दोस्त** के द्वारा **रचित** व **निर्देशित** रोमांचित करने वाला नाटक **'भूदान'** की प्रस्तुति हुई।

तृतीय दिवस

वर्धा, 7 फरवरी. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में **'विनोबा दर्शन'** पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन के **प्रथम सत्र** की शुरुआत 'ब्रह्म विद्या मंदिर' की प्रवीणा देसाई के 'प्रेम का पंथ है न्यारा' भजन से हुई।

सत्र की **अध्यक्षता डॉ. थामस चिरापुथ** ने की। संचालन **डॉ. मिथिलेश कुमार** ने किया। इस सत्र में प्रो. सोहनराज तातेड़, डॉ. हेमा मोरे एवं डॉ. शंभू जोशी विशेषज्ञ वक्ता के रूप में मौजूद थे।

सिंघानिया विवि के पूर्व कुलपति **प्रो. सोहनराज तातेड़** ने **'विनोबा भावे और जैन धर्म'** विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि विनोबा जी का बचपन से ही रुझान दर्शन की ओर था। 1916 में बनारस में उन्होंने महात्मा गांधी का भाषण सुना था और वे उससे काफी प्रभावित रहे थे। विनोबा जैन धर्म के 'त्रिरत्न' और 'पंच महाव्रत' से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। जैन धर्म हर जीव में आत्मा की उपस्थिति को कबूल करता है। विनोबा ने जैन धर्म के आत्मा के इस सिद्धान्त का गहरा अध्ययन किया था। उन्होंने अकर्त्ता भाव की प्रेरणा जैन धर्म से ग्रहण की थी। जैन धर्म के अंदर मृत्यु की कला भी बताई गई है। विनोबा ने 1982 में जैन धर्म की इसी संलेखना कर अपने देह के त्याग किया था। जैन धर्म की अहिंसा का भी गांधी-विनोबा दोनों पर गहरा असर दिखता है।

डॉ. हेमा मोरे ने **'विनोबा और बौद्ध धर्म'** विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि विनोबा ने कई प्रवचनों में बौद्ध धर्म की बात की है। विनोबा ने धम्मपद पर एक पुस्तिका की भी रचना की है। उन्होंने बौद्ध धर्म के विचारों को अलग तरह से देखने की कोशिश की है। विनोबा ने 20वीं सदी की समस्याओं के मद्देनजर बौद्ध धर्म को देखने का प्रयास किया है। बुद्ध ने निर्वैर्यता, करुणा आदि का विनोबा ने उल्लेख किया है। विनोबा ने दुख और दुख का कारण सामाजिक बताते हुए इसका सामाजिक समाधान प्रस्तुत किया। करुणा के जरिये वे सामाजिक समस्याओं का हल करना चाहते हैं।

'आचार्य विनोबा भावे की श्रम दृष्टि' विषय पर अपनी बात रखते हुए **डॉ. शंभू जोशी** ने कहा कि वर्तमान श्रम दृष्टि के पीछे औद्योगिक क्रांति की भावभूमि मौजूद है। जॉन रस्किन, जॉन बोंडारे, टालस्टाय और महात्मा गांधी श्रम को मानवीय अस्तित्व से जोड़कर देखते हैं न कि केवल आर्थिक उपार्जन के रूप में। विनोबा ने गांधी के विचारों को विकसित किया है। विनोबा ने श्रमदान की बात की है। वे आध्यात्मिक-वैचारिक श्रम के साथ-साथ उत्पादक शरीर श्रम को आवश्यक बताते हैं। विनोबा शरीर श्रम को समाज परिवर्तन से भी जोड़ते हैं। शरीर श्रम के जरिए ही समतमूलक समाज का निर्माण मुमकिन हो सकता है। यानि इसी के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक रूपान्तरण संभव हो सकता है। विनोबा सभी प्रकार के श्रम की एक समान मजदूरी की बात करते हैं और उसका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मूल्य एक समान मानते हैं। वे शारीरिक-मानसिक श्रम के भेद के बजाए इसके बीच समन्वय की बात करते हैं।

सत्र के अंत में प्रतिभागियों के द्वारा पुछे गए प्रश्नों का संबंधित वक्ताओं ने जवाब दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ इस चर्चा सत्र की समाप्ति हुई।

समापन सत्र के प्रारंभ में **डॉ. गीता मेहता** ने इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। समापन सत्र को संबोधित करते हुए **प्रवीणा देसाई** ने कहा कि इस तीन दिवसीय संगोष्ठी में हम सभी ने विनोबाजी के व्यक्तित्व और दर्शन पर विस्तृत चर्चा की। आज दुनिया नए विकास की दहलीज पर खड़ी है। इस दुनिया को आज विनोबा के धर्म और आध्यात्म के समन्वय दृष्टि की जरूरत है। विनोबा कहते थे कि मनुष्य को हर दिन एक नया विचार सीखना चाहिए जिससे उसके चित्त की हर दिन शुद्धि होती चली जाए। विनोबा के लिए गीता का संदेश देश-काल की सीमाओं में नहीं बंधा है बल्कि वह वैश्विक है। गीता सबों को आलिंगन देने वाला ग्रंथ है, उनके लिए गीता अत्यंत ही ऊर्जा देने वाला ग्रंथ है। विनोबा ने गांधी के एकादश व्रत में 'अनिंदा' का बारहवाँ व्रत जोड़ा था। गांधी के तीन बंदर में विनोबा ने चौथा बंदर जोड़ा था, जो दूसरों के बारे में बुरा नहीं सोचे। विनोबा ने कहा था कि विज्ञान जैसे-जैसे आगे बढ़ेगा, वैसे-वैसे मेरी बातें अधिक प्रमाणित होती जाएंगी। आज ढेर सारे चमत्कार आम लोगों की मुट्ठी में आ गए हैं।

समापन वक्तव्य देते हुए **प्रो. नंदकिशोर आचार्य** ने कहा कि आमतौर पर विनोबा की छवि एक संत और आध्यात्मिक व्यक्ति की रही है। सत्य को अंतिम रूप से जानने का दावा करते हुए ही धर्म-पंथ का निर्माण हुआ है। जबकि विनोबा की मान्यता थी कि आध्यात्म और विज्ञान में कोई चीज अंतिम नहीं है। दुनिया में फासीवाद की उत्पत्ति का मूल सत्य को अंतिम रूप से जान लेने के दावे में निहित है। इसके विपरीत विनोबा आध्यात्मिक विकासवादी हैं। विनोबा की बात सभी धर्मों के विरुद्ध जाती है। इसलिए विनोबा कहते हैं कि सभी धर्म-पंथ मिटने वाले हैं और भविष्य का युग आध्यात्म का होगा उसी प्रकार राजनीति मिट जाएगी और भविष्य का युग विज्ञान का होगा। विनोबा ने मानव विकास की प्रक्रिया को भली-भांति समझा था।

समापन सत्र का अंत सत्र के अध्यक्ष **प्रो. मनोज कुमार** के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने कहा कि किसी महापुरुष को उस महापुरुष की नजर से ही हम सही ढंग समझ सकते हैं। विनोबा को भी हमें विनोबा के नजरिये से समझने की कोशिश करनी होगी। आज के समाज में बदलाव की प्रक्रिया पूर्ववर्त्ती समाज की अपेक्षा अत्यंत ही तीव्र गति से चल रही है, इसी तीव्रता की संगति में विचारों को भी अद्यतन करने के लिए हमें प्रयत्नशील होना पड़ेगा। इस सत्र का **संचालन डॉ. मिथिलेश कुमार** ने और **धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शंभू जोशी**ने किया।

प्रो.गीता मेहता
संयोजक : राष्ट्रीय संगोष्ठी
डॉ.शंभू जोशी
स्थानीय सचिव : राष्ट्रीय संगोष्ठी

रिपोर्ट संयोजन : डॉ. मुकेश कुमार
रिपोर्ट संकलन समूह: नरेश गौतम, डिसेन्ट कुमार, मुस्लिमा अखतरा, सुनीता अहीर

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
विनीत दर्शन
ज्ञान शांति मैत्री

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
विनोबा

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
विनोबा दर्शन
ज्ञान शांति मैत्री

विनोबा दर्शन

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
साहित्य विद्यापीठ
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

य दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
ी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
नीवा दर्शन

Input-D
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
ान : गालिब सभागार, साहित्य
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
विनोबा दर्शन
ज्ञान शक्ति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
विनोबा दर्शन
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
ज्ञान शांति मैत्री

विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार,

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
विनोबा दर्शन

स्थान :

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार,
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
ग्रंथालय सभागार, साहित्य विद्यापीठ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
का संयुक्त आयोजन
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(5-7 फरवरी, 2018)
विनोबा दर्शन
स्थान : गालिब सभागार, साहित्य विद्यापीठ
ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शान्ति मैत्री

ICPR National Seminar on
Philosophy of Acharya Vinoba Bhave
(5-7 February 2018)

In collaboration with
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

REPORT OF THE THREE DAY SEMINAR ON PHILOSOPHY OF VINOBA BHAVE

I highly appreciate the expert committee of ICPR which considered me to be an appropriate person to hold this seminar. Unfortunately, I had to search for the scholars from far away i.e. USA some scholars were not available on email, So I have to approach them through Phone and through Dr. Harsha Badkar. I very much appreciate her cooperation in this yajna.

When I approached your Vice-Chancellor in the morning at 9.00 A.M. in U.S.A. through email which was 11.30 P.M. in India he responded on email immediately and welcomed the Seminar of ICPR at the University. He suggested the name of Dr. shambhu Joshi as an appropriate Co-coordinator from this University. When I met the vice-chancellor on 17th Nov. 2017, it was not only Dr. Shambhu Joshi but also Dr. Mithileshji who enthusiastically accepted the responsibilities. You know such a seminar requires lot of arrangement of lodging, boarding, Vehicle, cultural programmer, preparing the students, clerical work & what not? Let me tell you that both of them met all the responsibilities properly. As per my habit, I had to talk to them about different arrangement & happily, they used to reply, 'Do not worry Madam, it will be done'.

The seminar went on well & it satisfied us physically by proper lodging & boarding, academically by very good research papers, though it was an obstacle race for me. I requested Prime Minister Rimponcheji in the month of Nov. but due to prior arrangement, he expressed his inability. Our vice- chancellor was consulted for the dates of the seminar but it became necessary for him to go out of India. It is appreciable that the Pro. V. C. who has also worked with Dr. Subbroaji came for the inauguration. The ICPR office- bearers also could not come due to the Govt. Committee visiting them. In spite of all these all academic sessions went very well. The students of Dasshana came regularly for all the three days.

However, the sessions were divided as per different aspects & they went on very well. Inauguration started with lightening the lamp and the song of Jag-Jagat then Dr. Geeta Mehta welcomed every one explaining the theme of the seminar. Dr. shambhu joshi was the co-ordinator, he also read the messages from Prof. Girishwar Mishra, V. C. of the University and Prof. S. R. Bhatt, president ICPR. Shri. Balvijayji gave very good

introduction of Vinobaji's journey from Brahmajigyasa to Brahmanirvana. The message of Vinobaji is Samyayoga and how did he achieve during his life-span. The two well known verses composed by Vinoba were cited during his lecture.

वेदवेदांत गीतानाम् विनुना सार उदधृत: ब्रम्ह सत्यं जगत्स्फूर्ति : जीवनम् सत्यशोधनम्।

The other one was

वेदांतो विज्ञान विश्वासश्वेति शक्तय: तिस्र:।

यासां स्थैर्ये नित्यं शांति समृद्धि भविष्यतो जगति।।

PVC Anandavardhanji considered it to be the subject of Pride that this University in the Karma Bhumi of Gandhi & Vinoba was selected for the seminar. He remembered his young days where he joined Gandhi train during 1969. he said "Jai-Jagat" is the 'vasundhaiv kutumbakam' during these days.

Prof. Ramji Singh gave key-note address and showed Gandhi & Vinoba as Continuum.Gandhi himself said that Vinoba is ahead than him in spirituality. Vinoba has discussed theoretically & practiced accordingly about all the there points of philosophy namely jiva, jagat and Isvara. Vinoba observed three important virtus of God i.e. Truth, Love and Compassion and propagated them throughout the country by walking more than the periphery of the earth for more than two decades. Vinoba said that Jagat is sphurti and a scientist also narrates a girl that I see dancing electrons in this girl. Vinoba was an example of change of heart of others. He himself was so compassionate that he can raise the compassion in the hearts of land-owners.

The Ist technical session was that of 'Vinoba and scriptures' chaired by Dr. Girish Jani, Assistant Prof of Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai. Ms. Usha Vora from Brahma Vidya Mandir talked about Upanisad and Vinoba. She referred to Isavasya vritti and Astadasi of Vinoba. Isavasya vritti was written at the insistence of Mahatma Gandhi, Astadasi includes the essence of other Nine Upanisads. Upanisad is deep/casting while parisad is broad casting.

Dr. Sharmila Virkar from Mumai University, well prepared paper on shita Praon & Vinoba. presented her. Tena tyaktena bhunjithah gives the equation 'Tyaga' + 'Bhoge' = Life. It is linguistic & analytic in Sthita Pralna Darshana. It is executive argumentation. It Is remarkable of Jnana Samadhi instead of Dhyana Samadhi. The word sthitaprajna is the peculiarity of B. G. Sthitaprajna is a duty oriented person and self-realized one. The word चरति implies happiness of Sthitaprajna.

Prof. Nanda Kishore Acharya highlighted on विनोबा : अहिंसा की तत्वमीमांसा। He emphasized the book 'Swaraj Shastra', the book written by Acharya Vinoba Bhave. He

had Atma bal (soul-power) Prem bal (power of love) & Karuna Bal (Power of compassion). Order is Universal system. There should be experience of oneness with least all human beings. Morality depends on this unity. It is necessary to develop such moral life for the development of conscience. The individual is undivided unit of society and therefore he has to tolerate the evils of the society also. There should be the oneness between oneself & the other in Satyagraha. When the other is considered as the one then there is possibility of real Satyagraha.

Dr. Girish jani commented as a chairperson on these presentations with deep understanding by differentiating sthitaprajna and sthiradhi. Sthita means established –स्था is गतिनिवृतौ । He also quoted shastras on the paper of Acharya Nandakishore as अपुनर्भवो रागद्वैषयो: अहिंसा उच्यते।

The II session of Social issues was chaired by Prof. Nandkishore Acharya. Shri Gautam Bajaj Spoke on Ashram Samkalpana of Vinoba and explained the purpose of six Ashrams started by Vinobaji. The whole life of vinobaji is in search of Non-violence therefore Bhoodan, Gramdan follows from that. He highlighted the purpose of Brahma Vidya Mandir which is situated at wardha.

It has following eight program.

1. Spirituality should have Socio-economic base.
2. The sisters do not get vegetables and clothe from outside.
3. They live with celibacy.
4. It is a Social experiment.
5. They have Universal vision in their work.
6. Simplicity.
7. No much need of the market.
8. No need of a manager.

Ms. Radha Bhatt from Uttara khand, working for Chipko and save the Ganga etc. presented her views about Vinoba & Women. Vinoba had conceptual kingdom of kindness. All the virtues narrated in the B. G. are the virtues of women and Vinoba has given lectures on them at Indore during 1960. Women have to become powerful.

Former Vice-Chancellor of Gujarat Vidyapeeth Prof. Suharshan Iyengar presented his views on Vinoba's contribution to Gandhian ideal of education. Vinoba's Nitya Naitalima teaches us self-reliance and self-realization. It is not possible without eleven vows. There is no sense of liberty without self-realization.

Prof. chandrakant Ragit talked about 'Vinoba Bhave as a modern saint'. He talked about unity of knowledge, action and devotion in the life of Acharya Vinoba Bhave. He talked about the importance of कांचन-मुक्ति and आचार्यकुल amongst the aspirants.

The Chair Person Prof. N. K. Acharya presidied and commented that freedom from market is freedom from exploitation. Gandhiji & Vinoba were True Feminist.

Then there was a session where the papers were written by the new professors and the student were presented. Prof. Chandrakant Ragit and Prof. Anil Kumar Rai chaired the session. The Though some papers were not sub-titled but they were written with the study of the books and therefore accepted for presentation. Dr. D. N. Prasad, Dr. Purandardas, Dr. Akhtar Alam and Dr. Nitu singh presented their paper.

There was a film from film Division on Vinoboji which was shown by the Dept of Performing Arts.

The III Session of 6th Feb. was chaired by Ms. Pravina Desai of Brahma Vidya Mandir. She presented her paper on 'Vinoba's exposition of the B.G.' in lucid language. She showed the establishment of Samya-yoga in the B. G with reference to certain verses. Vinoba tried exposition of samya at all levels of life. There is an inspiration to create an egalitarian society through non-violent methods, for every new generation with a dynamic goal in search of peace-potential and sustainable Global pattern of life.

Then Dr. Girish jani spoke about 'Vinoba's Vision of the Vedas' He Pointed out 3 pointe where he has difference of opinion about Vinoba's views on Vedas. In his liberal & unconventional analysis of the mantras, Vinoba has explained the vedic enlightenment of the topic related to equality of human beings, unity and brotherhood, moral values and noble character, social harmony & well-being, place of karma, jnana, bhakti & upasana in human life. He has analyzed certain mantras and showed us how they help for attaining the intellectual level, good health & individual as well as social welfare. The mantra समानीव आकूर्ति: should be the life motto according to him.

Then Dr. Geeta Mehta presented paper on 'Metaphysical bases of Vinoba Bhave's Philosophy' and discussed about Vinoba's exposition of Brahiman, Jagat and Jiva. The sat Brahman is seen in the world. Cit Brahman can be realized in meditation and Anand Brahman by can be seen in the eyes of the saints. There is no difference between container (Brahman) & Contained (jagat). Jagat is mere vibration of Brahman. Both Gandhiji & Vinoba realized Being through Becoming which not only enriched both of them but the world at large. If manifestations of Brahman are ever to grow then there cannot be place of Violence.

Miss. kanchan from Brahma Vidya Mandir, spoke about the idea of science & spirituality brought out by Vinoba Bhave. It is a very much needed concepti of science being guided by spirituality. Science increases the speed but the direction should be determined by spirituality. Both should be progressed in all the countries. We have to rise beyond mind on the level of super-mind. Scientific attitude should be developed in all aspects of life which will lead to a world-citizen. Jai-jagat points to this vision.

Prof. Sohanraj Tated chaired IV session of religion where Dr. Harsha Badkar said that Vinoba brings about a viable solution for peace & harmony. He understands the spiritual base of any religion where humanity will come together. He wanted to spiritualize Politics. He gave us Nammala with the object of bringing different aspirants together. He was deeply influenced by other messengers. He brings about assimitation & absorption of our precious heritage. Religion guides man towards spirituality which is sublimating to all. In his views on religion, there is commitment, respect & reform at the same time opposition to irreligion.

Dr. Tabassum discussed Vinoba Bhave's study of Quran for 25 years. It has served the purpose of uniting the hearts. Vinoba was very conversant with Quran. He has taken appropriate selections. She cited Vinoba's visit to Ajmer & the prayers thereafter. Maulana Azad, Vinoba showed proper understanding of religions.

Father Thomas chirapurrath gave importance to action & contemplation in the life of Monestry. Vinoba was moved by cruciti of christ. The essence of Christian teaching is from New Testament, it takes into considerations first 20 gospels, 44-45 chapter 5 in jacob, 47 in peter & 50 in John. Only one door to God i.e. Christianity was objected by Vinoba because Christ has said that many messengers were sent by God.

Section V On Political and Economic idea started with the chairmanship of Prof. Sudarshan Iyangar. Prof. Rodrick Chureh presented his views on **Rishi kheti and *Kanchan-mukti*** implied 'living without money'. The second rishi-kheti (rishi-farming) arose when the first was pursued through agriculture and implied 'farming with human labor alone'. These concept never gained much acceptance and soon but disappeared, even from Gandhian discourse. This seminar acknowledges that Kanchan-mukti and Rishi kheti are little known today but suggests they still 'can be useful in current times' and may help to create renewed interest in Vinoba. While *Kanchan –mukti* becomes more radical, more utopian, *rishi-kheti* become ever more pragmatic. It is adopted in Japan iin modern days known as Fukuoka.

Dr. Parag Cholkar regretted that there is no proper information about the land secured land distributed. The books on Rural Economic do not include name of Vinoba bhave. People should study the exact information from the book of Bhoodan and Gramdan.

Philosophy if it does not regulate present age problem, is not philosophy. We cannot dismiss the importance of Vinoba's contribution. As air and water, the land does not belong to anyone. Vinoba gave alternative to communism.

Dr. Milind Bokil gave examples of two gramdans mendha lekha and panchgaon where books are writen on them. Gandhi's Hind swaraj is the hypothesis while Swaraja Shastra of Vinoba is practical manual. He gave the idea of Ekayatan. Anekayatan and Sarvayatan i.e. consensus news of all. To accept 'Anekayatan' is a kind of violence against

minority. The message of these two villages will reach to the different villages by what's up & Face book and the other villages will also join them. The villagers themselves wrote 550 rules for themselves. They will have their right on nearby jungles and therefore they are happy.

Dr. Pushpendra Dube presented paper on Economic ideas of Acharya Vinoba Bhave. He started with Indore being the most clean city in India. He was pained to read the news in the News paper yesterday that we cannot do away with the job of carrying human waste because the Government cannot give them other job. He pointed out that Spirituality should solve the problems of labour. He enlightened us on the problem of land, village oriented khadi, peace potentiality, brain-drain from villages, parochialism, Market based on economy etc.

Prof. Ramji Singh expressed his concern that the Gandhians are scattered now and wanted to find out to generate man-power session. Then there were sessions in which the Research papers were presented by the faculties and the students Prof. Manoj Kumar and Nrupendra Mody chaired the session. Dr. Arun Pratap singh, Dr. Mithilesh Kumar, Kum. Varsha Chaurasia, Mr. Shivsankar Patel, Mr. Pravin Pathakm Ms. Mamta Kumari, Dr. Archana Pathya, and Dr. Chandrakala Sahu presented their papers,

We had an appealing drama from the Dept. of performing Arts of the University. They showed the conditions of the down-trodden and how Bhoodan started. It was with the thought from the villages with dance.

They asked for the suggestions and Dr. Geeta Mehta told them to introduce Gramdana. Pravina Desai told them to bring out the thoughts behind this movement and Prof Sudarshan Iyengar inspired them to develop a whole drama of three hours with Audio –Video of the persons who walked with Vinobaji.

Session –VI started with the devotional song of प्रेम पंथ on 7th Feb. 2018. Then Prof. Mithilesh invited the chair person father Thomas Chiraputtrath and the speakers, Prof. Sohanraj Tater was the first speaker who talked about -सम्यक् दर्शन ज्ञान और चारित्र्य। He talked about महा व्रत और अणुव्रत, Vinoba was Anuvrati, according to him. Six substances are loka & beyond that is Aloka. Atman is connected with karman Sarira, Akartabhava has been adopted by Vinobaji from Jaina Religion. One whose Ragadwesa is over then the Atman is liberated. The special aspect of Jain religion is the way of dying Vinoba adopted Samlekhana at last.

Dr. Hema More presented paper on 'Vinoba on Buddhism'. There are 426 gathas and 26 chapters which are systematically presented as per the subject like तृष्णा etc. He has rearranged into कर्मयोग, साधना and Nishtha. There are hundred chapters on them. He has named it as Nav-samhita. The name of the chapters are in Vinoba's own words.

Dhammpada has samanvaya in it self. His lectures belong to different time and in different contacts. He called Bhoodan as Dharma chakra Pravartan . He has done chapterization with earlier tradition. धर्म चिंतन is an eternal process, thus Buddhism is rearranged by Vinoba Bhave.

In Hinayana one's wanted one's own nirvana. Mahayana wanted salvation of everyone. She showed the difference between Mahayana and Vinoba's social aspect.

Vinoba gave the message of no enmity of Buddha after two world wars. Buddha had realization of four eternal truths, Vinoba observed Karuna. He accepts view of organic whole of the society. He showed the relation of तृष्णा, निर्वैरता & कारूण्य,

Dr. shambhu Joshi presented paper on विनोबा की श्रम दृष्टि. He said that Adam smith, David Reccardo, Karl Max etc. had a concept on labour in terms of money, the other side was not to see labour in terms not only of money, they were Raskin, Hondole, Gandhi & Vinoba. Vinoba accepts advaitic background of साम्ययोग and समन्वय.

He said that the change of heart (हृदय परिवर्तन) takes place through Isvara. The change of circumstances (परिस्थिति परिवर्तन) takes place through society (समाज). The change of thought (विचार परिवर्तन) takes place through individual (व्यक्ति) and service (सेवा) takes place through labour (श्रम).

We join to the nature and society through Sharma. Even the prayer of enlarging compassion towards living heings (भूतदया) is accomplished by shrama. Change in social and political situation includes shrama in the presuppositions of Vinoba. The individual intensifies exploitation by not doing shrama (Work with hand). The point of view about labour changes our religious, social and cultural view point. The earlier system of education included Shrama in it, all the saints were shrarma-oriented. We have forgotten that Vinoba believes in same value of all labour. He accepts agriculture as the best kind of labour. Vinoba does not consider only bread-labour as the labour. He considers Ramayana of Valmiki and Savitri of Aurbindo as also a kind of love for labour.

In valedictory Dr. Mithileshji invited Dr. Geeta Mehta to present the report then Pravina Desai and Prof. Nand kishor Acharya were invited as valedictory speakers. Pravina reminded.

प्रवचने जयभावना - we tried to remember vinoba's is all aspects. What he taught about future, we also decided about our firm faith. Prof. N. K. Acharya showed us the way how to reach to the world through satya. Benzil has said that for Universal religion which will be known as Vinobian dharma. Two incidents of Vinoba's life were narrated. In sabarmati Ashram that he labored for 28 hours & 32 hours. Nobody could ask him question. When asked with courage. Vinoba said that when I water the plants, I teach the students, when I ut the

vegetables, I dictate the letters, so more than 24 hours, then it was asked, why so much hurry ? He said, life is too short so I try to work as much as possible. Other incident is that of a tamilian brought Tirnkural, we were there Baba showed the mistakes on first page & told Balbhai to give him dictionary. When asked, you have learnt many languages-how can you find out the mistakes of one language. He replied, 'I am greedy if one person learns something then it is transplanted in all beings. It I tried the proper expression then it will reach the whole world correctly. The propagators will not keep ego, it will be done by nature. You have to go for propagation. So that you cleanse your Chitta. Baba told me to unlearn what I have learnt earlier. Learn how you have to unlearn if your want to transform in your life than yesterday. This was his position.

He gave me six orders for propagation of Gitai,

1. Do not consider it to be the only book for self-realization so.
2. Gita is best book as far as I have studied the shashrars.
3. Gita is very powerful & power requires the way to unfold it. urja will develop activism.
4. It tries to develop Universal man.
5. We can develop peace in the world by 12 vows. A breathing is important for individual, life is impossible, trust is important in the society. Ve should add the four monkey of बुरा मत सोचो। Botany also proves that plants carry the feeling if we reach them with the idea to cut them.
6. शोधन is shuddhi as well as sadhana, super gene will be develop & saints & prophets will be prepared by it.

Prof. N. K. Acharya expressed himself in this manner. "I did not have much interest in vinoba because all prophets have said that we know full truth and therefore I was not interested to meet any saint. I found one seeker who said that there is no end in adhyatma. It will go on developing; there is no end to it. All facists say that the know full truth. Vinoba only says that adhyatma will unfold in future. Therefore when Vinoba says that future will be that of spirituality, I am impressed by him.

He is believer spiritual development. Darwin (विकासवादी) says that when there is human form, so what he will be with reflection, thinking. Thus we will have future conscience which is awakened.

There is development which is the law of nature. It develops in us, Now, if conscience has developed, it is out of life. The process of development is not linear it is dualistic as Hegel says. The process develops towards highest when there is a common factor. Vinoba has understood this process very well.

When you develop towards science then there is no place for faith, there is place for reason only. All religions have developed out of curiosity. Religions have different sects because of this. I do not think Vinoba is not thinking of synthesis only but he tries to

develop the definition. Why does he try to give essence of religions because he observes something to be reformed in religions. He has defined religions in different manner.

Science is coming nearer to spirituality. During the progress of science there is no need of faith. To-day we have such vision of science and spirituality as our ancestors did not get much help from science. In future, we can hear atman, we can see atman, how? Atman is not accessible to senses. The eight fold prakriti in clueds-mind, intellect and ego. So long as mind is there, It is difficult to know prakriti, it becomes subjective.

I do not think Vinoba is only giving us essence. He tries to find new definition of religion which others have not thought of.

Pravina Desai was given time to reflect on the question asked yesterday that what is lacking in us that we do not see the activities full of enthusiasm?

Her answer was that from the very beginning Vinoba used to say-Maze navarup lopo-let my name and form disappear because he did not want to bind the thought into his personality. If we do that then we get an idol which will not have movement. He desired that there should not be worship of an individual but there should be the progress of all the people.

Hindu Religion is yet alive because it is decentralized. The preserved energy which is hidden in our atman will not be destroyed. We will have light from others and will develop our own light.

As Pro. V. C. could not come for valedictory sessions Prof. Manoj kumar,Director, Mahatama Gandhi and Fuji Guruji Department of Social Work requested to be the chair person of the session and gave his concluding remarks.

Prof. Manoj kumar said that he has participated in the seminar with full concentration. We have understood Vinoba as he is, from this seminar, otherwise I have seen Gandhi from the point of view of Lohia and Vinoba from the point of view of Jaiprakash Narayan. We do not want to see Gandhi and Vinoba in the line of Rama and Krishna.

Our university is yet developing. We will publish these Research Papers and thus a river will flow. Time-constraint was the peculiarity of this seminar. We have literature, women-power, shanti-sena, Acharya-Kula etc yet to include.

Wherever we talk and write about these great thinkers we have to think in terms of the youth. At one time the change of situation took place after years, then after months and now the situation and environment change every moment. We have to bring the change in the education accordingly.

Dr. shambhu joshi thanked everybody who helped in fulfilling the work of this seminar. He thanked the person who brought out exhibition, who performed the drama of

"Bhoodan", Dr. Rajeshji who prepared the report in hindi and all other who helped in making this seminar a successful one.

In all 24 papers were presented by invited research scholars and 17 Papers were presented by other scholars. The seminar went on very well and we had deep bath into the thought river of Acharya Vinoba Bhave. All of us thank Indian Council for Philosophical research and Mahatma Gandhi Hindi Vishwa Vidyalay, to make it possible.

Dr .Geeta Mehta
Coordinator of the seminar
philosophy of Vinobha Bhave